२५

शास्त्रार्थ-अजमेर

ग्रन्थ परिचय

स्थान	:	अजमेर
समय	:	संवत् १९३५, मार्गशीर्ष सुदी ५, (२८ नवम्बर १८७८; सोमवार)
प्रकाशन	:	'दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह' (रामलाल कपूर ट्रस्ट) 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के शास्त्रार्थ और प्रवचन'
सम्पादक	:	डॉ० भवानीलाल भारतीय

(सम्पादक)

सम्पादकीय

अजमेर में ऋषि दयानन्द का पादरी ग्रे के साथ शास्त्रार्थ हुआ। इसका विवरण पं० लेखराम द्वारा संगृहीत स्वामीजी के उर्दू जीवन चरित्र में पृष्ठ ७१४ से ७१९ (हिन्दी सं० पृ० ७३७-७४४) तक दिया गया है। 'दयानन्द-दिग्विजयार्क' भाग १ मयूख ६ में भी 'किरानी-मत-खण्डनं' शीर्षक के अन्तर्गत इस शास्त्रार्थ का विवरण प्रकाशित हुआ है। मुन्शी बख्तावरसिंह द्वारा सम्पादित 'आर्य-दर्पण' मासिक के जून १८८० के अंक में पृष्ठ १३६ से १४९ पर्यन्त यही विवरण हिन्दी तथा उर्दू में समानान्तर कालमों में प्रकाशित हुआ। इस विवरण के लेखक ऋषि दयानन्द के अनन्यभक्त एवं ऋषि के अन्तिम वर्षों में 'वैदिक यन्त्रालय' के प्रबन्धक मुन्शी समर्थदान थे। जैसा कि नीचे उद्धृत सम्पादक 'आर्यदर्पण' के नाम लिखित मुन्शी समर्थदान के पत्र से ज्ञात होता है। इस शास्त्रार्थ का 'आर्य-दर्पण' में प्रकाशित विवरण यहां दिया जा रहा है।

'मुन्शी समर्थदान' का पत्र सम्पादक 'आर्यदर्पण' के नाम

नमस्ते—मैं आपके पास यह शास्त्रार्थ भेजता हूँ। कृपा करके अपने बहुमूल्य पत्र में इसको स्थान दीजिये। इसमें जितने प्रश्नोत्तर हैं, वे सब उसी समय के लिखे हुये हैं, क्योंकि उस समय तीन लेखक इसी कार्यार्थ बिठलाये थे, उन्होंने बराबर अक्षर-अक्षर करके लिखा। उसकी एक प्रति पादरी साहब ने ली और दो स्वामी जी महाराज ने। इन दोनों प्रति पर सरदार बहादुर मुन्शी अमीचन्द साहब और पण्डित भागराम जी के हस्ताक्षर भी हैं। मैं वहां शास्त्रार्थ में उपस्थित था, इसलिये स्वामीजी महाराज ने दोनों प्रति मुझे दे दी थीं और आज्ञा की थी कि इनके अनुसार छपवा देना और सब वृत्तान्त भी लिख देना। महाराज की आज्ञानुसार मैंने सब वृत्तान्त लिखा, सो भेजता हूँ। मैंने कितने ही स्थानों पर पादरी साहब का पूर्वापर विरुद्ध भाषण प्रकट होने के लिये नोट भी कर दिये हैं।

—समर्थदान

शास्त्रार्थ-अजमेर

[जो स्वामीजी और पादरी ग्रे साहब के बीच १८७८ ई० में हुआ।]

[पूर्व-पीठिका]

विदित हो कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी कार्तिक सुदी १३ सं० १९३५ के दिन अजमेर में आये थे। थोड़े दिनों के पीछे वेदादि सत्य शास्त्रोक्त धर्म-विषय में व्याख्यान था। उस दिन अजमेर के बड़े पादरी ग्रे साहब और डाक्टर हसबैण्ड साहब भी आये थे। उसमें स्वामीजी ने शास्त्र और युक्ति से यह सिद्ध किया कि ईश्वरकृत पुस्तक केवल चार वेद ही हैं, अन्य कोई नहीं। इसके पीछे एक बड़ा सूचीपत्र तौरेत, इंजील और कुरान की अशुद्धता का पढ़ कर सुनाया, और कहा कि—

"मैंने यह सूचीपत्र किसी को चिढ़ाने के लिये नहीं सुनाया है, किन्तु इसलिये कि सब लोग पक्षपात-रहित होकर विचारें कि जिन पुस्तकों में ऐसी-ऐसी बातें लिखी हों, वे ईश्वरकृत हो सकते हैं वा नहीं?"

इस बात पर पादरी ग्रे साहब ने कहा कि—आपने जो तौरेत और इंजील की बातें सुनाई, उनमें प्रश्न लिखकर आप मेरे पास भेजें, मैं इनका उत्तर दूंगा। स्वामीजी ने कहा कि—मैं तो यही चाहता हूं और सदैव मेरी यही इच्छा रहा करती है कि आप जैसे बुद्धिमान् पुरुष मिल के सत्यासत्य का निर्णय करें।

पादरी साहब ने कहा कि—सत्य का निर्णय जब होगा कि आप मेरे पास प्रश्न भेजेंगे और मैं उत्तर दूंगा। फिर स्वामीजी ने कहा कि—लिखकर दोनों ओर से प्रश्नोत्तर भेजने में काल बहुत लगता है, और मनुष्यों को भी इससे लाभ नहीं पहुंचता। इसलिये यही बात अच्छी है, कि आप भी यहां आवें और मैं प्रश्न करूंगा और आप उत्तर दें। तब पादरी साहब ने कहा कि—आप प्रश्न मेरे पास भेज देवें, जब मैं दो चार दिन में उनको विचार लूंगा, तब पीछे आपको उत्तर यहाँ आकर दूंगा। स्वामीजी ने कहा कि—प्रश्न तो मैं नहीं भेजूंगा, परन्तु मुझको जहां-जहा इंजील और तौरेत में शंका है, उनमें से थोड़े से वाक्य लिखकर भेज दूंगा। उनको जब आप विचार लेंगे, तो उन्हीं में मैं प्रश्न करूंगा, आप उत्तर देना। फिर इतनी बात होने के पीछे पादरी साहब चले गये।

उसके दूसरे दिन स्वामीजी ने तौरेत और इंजील के साठ वाक्य लिखकर पण्डित भागराम साहब एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर के द्वारा पादरी साहब के पास भेज दिये।[1] फिर नौ दस दिन पीछे जब पादरी साहब ने उनको विचार लिया और व्याख्यान हो चुके, तब एक दिन प्रश्नोत्तर के लिये नियत हुआ। उस दिन नोटिस दे दिया था, इस कारण से बहुत लोग आये। सरदार मुन्शी अमीचन्द साहब जज, पण्डित भागराम साहब एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर, सरदार भगतसिंह साहब इंजीनियर इत्यादि प्रतिष्ठित पुरुष आये थे। जब समय हुआ तब स्वामीजी चारों वेदों के पुस्तक लेकर आये और पादरी साहब भी बहुत सी पुस्तकें लेकर आये। पादरी साहब के साथ डाक्टर हसबैण्ड साहब भी आये। प्रथम स्वामीजी ने कहा कि—मैंने कितनी ही जगह पादरी लोगों से बातचीत की है, कभी किसी प्रकार का कुछ गड़बड़ नहीं हुआ। आज भी मैं जानता हूं कि पादरी साहब से वार्तालाप निर्विघ्नता से पूरा होगा। फिर पादरी साहब ने भी निर्विघ्नता से बातचीत होने की आशा प्रकट की, और कहा कि—स्वामीजी ने जो वाक्य लिखकर हमारे पास भेजे हैं वे बहुत हैं, और समय केवल दो अढ़ाई घण्टे का है। इसलिये प्रत्येक वाक्य पर दो बार ही प्रश्नोत्तर होना ठीक है। इसके पश्चात् प्रश्नोत्तर होने लगे। और तीन लेखक[2] भी बिठला लिये। इन तीनों को स्वामीजी और पादरी साहब बोलते समय अक्षर-अक्षर लिखवाते जाते थे।

[स्वामी जी और पादरी ग्रे के मध्य प्रश्नोत्तर]

स्वामीजी—तौरेत उत्पत्ति की पुस्तक पर्व १ आयत २ में लिखा है कि—'पृथ्वी बेडोल थी।' अब देखना चाहिये कि परमेश्वर सर्वज्ञ है, सब विद्या उसमें पूरी हैं। उसकी विद्या के काम में बेडोलता कभी नहीं हो सकती, क्योंकि उसके सब काम बेभूल हैं। बेडोलता मनुष्यों के काम में हो सकती है, क्योंकि उनकी पूरी विद्या और सर्वज्ञता नहीं है। इससे जीव

१. इन वाक्यों के साथ वेद-भाष्य भी भेजा था, क्योंकि पादरी साहब ने कहा था कि आप बाइबिल में प्रश्न करें, मैं उत्तर दूंगा, और मैं वेदों में कितनी ही बातों पर प्रश्न करूंगा, आप उत्तर देना। पादरी साहब ने वेद-भाष्य देखा होगा, परन्तु प्रश्न नहीं किये।

२. बाबू रामनाथ हैडमास्टर राजपूत स्कूल जयपुर, बाबू चंदूलाल वकील गुड़गावां; हाफिज मौहम्मद हुसैन, दरोगा चुंगी, अजमेर। —समर्थदान

के काम में बेडोलता रह सकती है, ईश्वर के काम में नहीं।

पादरी—यहां अभिप्राय 'बेडोल' से नहीं है किन्तु उजाड़ से है। आयूब की किताब बाब २ आयत २४ में है कि—'बिना मार्ग जंगल में उन्हें भ्रमना है', यहां जिस शब्द का अर्थ है, [बिना मार्ग जंगल] उसी का अर्थ यहां बेडोल है।

स्वामी—इससे पहली आयत में यह बात आती है कि—"आरम्भ में ईश्वर ने आकाश और पृथिवी को सृजा और पृथिवी बेडोल सूनी था। गहराव पर अंधियारा था", इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि उजाड़ का अर्थ उजाड़ के होते तो 'सूनी थी' इस शब्द की कुछ आवश्यकता नहीं थी। और जब कि ईश्वर ने ही पृथिवी को रचा है, सो प्रथम ही अपने ज्ञान से डोलवाली क्या नहीं रच सकता था?

पादरी—दो शब्द एक ही अर्थ के सब भाषाओं में एक दूसरे के पीछे बहुधा आते हैं। जैसे इबरानी में 'तोहूबोहू' फारसी में 'बूदोवाश' ये सब एक अर्थ के वाची हैं। इसी प्रकार उर्दू में यह अर्थ ठीक है कि 'जमीन बेरान और सुनसान थी।'

स्वामीजी इस बात पर और प्रश्न करना चाहते थे। इतने में पादरी साहब ने कहा कि—एक-एक वाक्य पर दो-दो प्रश्न और दो-दो उत्तर होने चाहियें। क्योंकि वाक्य बहुत हैं, नहीं तो सब प्रश्न आज न हो सकेंगे। स्वामी जी ने कहा कि—यह अवश्य नहीं है कि आज ही सब वाक्यों पर प्रश्नोत्तर हो जायं, कुछ आज होंगे। फिर इसी प्रकार दो चार दिन अथवा जब तक ये वाक्य पूरे न हों, तब तक प्रश्नोत्तर होते रहेंगे। जब पादरी साहब ने इस बात को स्वीकार नहीं किया, तब स्वामीजी ने कहा कि—यदि अधिक न हों तो एक वाक्य पर दश वार प्रश्न होने चाहियें। पादरी साहब ने यह भी स्वीकार न किया। स्वामीजी ने कहा कि—प्रत्येक वाक्य पर कम से कम तीन वार प्रश्नोत्तर तो होने ही चाहियें। इस पर भी पादरी साहब ने कहा कि हमको दो बार से अधिक प्रश्नोत्तर करना कदाचित् स्वीकार नहीं है। तब स्वामीजी ने कहा कि हमको इसमें कुछ हठ नहीं है, सभा की जैसी सम्मति हो वैसा किया जाय। स्वामीजी की इस बात पर कोई कुछ न बोला। परन्तु डा० हसबैण्ड साहब ने कहा कि यदि सभा से प्रत्येक विषय में पूछेंगे, तो चार सौ मनुष्य हैं उसमें से किस-किस से पूछा जायेगा? स्वामीजी ने कहा कि यदि पादरी साहब को तीन

प्रश्न करना स्वीकार नहीं है, तो जाने दो, हम दो करेंगे, क्योंकि इतने मनुष्य विज्ञापन देखकर इकट्ठे हुये हैं, जो यहां कुछ बात न हुई तो अच्छा नहीं। फिर स्वामीजी ने दूसरे वाक्य पर प्रश्न किया।[१]

स्वामी—वही पर्व और वही आयत—'**और ईश्वर का आत्मा जल के ऊपर डोलता था।**' पहली आयत से विदित होता है कि ईश्वर ने आकाश और पृथिवी को रचा, यहां जल की उत्पत्ति नहीं कही, तो जल कहां से हो गया? ईश्वर आत्म-स्वरूप है वा जैसे कि हम शरीर वाले हैं वैसा? जो शरीर वाला है तो उसका सामर्थ्य आकाश और पृथिवी बनाने का नहीं हो सकता। क्योंकि शरीरवाले के शरीर के अवयवों से परमाणु आदि को ग्रहण करके रचना में लाना असम्भव है, और वह व्यापक भी नहीं हो सकता। जब उसका आत्मा जल पर डोलता था, तब उसका शरीर कहां था?

पादरी—जब पृथिवी को सृजा तो पृथिवी में जल भी आ गया। और दूसरी बात का उत्तर यह है कि परमेश्वर आत्मस्वरूप है। तौरेत के आरम्भ से इंजील के अन्त तक परमेश्वर आत्म-स्वरूप कहलाया।

स्वामी—ईश्वर का वर्णन तौरेत से लेकर इंजील पर्यन्त में बहुत ठिकानों में ऐसा है कि—वह किसी प्रकार के शरीर भी रखता है, क्योंकि आदम की बाड़ी को बनाना, वहां आना, फिर से ऊपर चढ़ जाना, सनाई पर्वत पर जाना, मूसा, इबराहीम और उनकी स्त्री सरी से बातचीत करना, डेरे में जाना, याकूब से मल्लयुद्ध करना, इत्यादि बातों में पाया जाता है कि अवश्य किसी प्रकार का शरीर वह रखता है, वा उसी दम अपना शरीर बना लेता है।

पादरी—ये सब बातें इस आयत से कुछ सम्बन्ध नहीं रखती हैं, केवल अंजानेपन से कही जाती हैं। इस का यह ही उत्तर है कि यहूदी, ईसाई और मुसलमान जो तौरेत को मानते हैं, इस पर एक सम्मत हैं कि खुदा रूह है।[२]

---

१. देखो यह सभा सत्य के निर्णय के लिये की गई थी, और सत्य का निर्णय तब ही होता है कि जब एक वाक्य पर अच्छी प्रकार प्रश्नोत्तर हो जायं, किन्तु पादरी साहब ने ऐसा न करके दो प्रश्न और दो उत्तर करने की ही हठ की परन्तु फिर भी अपना बचाव न कर सके, कलई खुल गई। —समर्थदान

२. पाठको! पहले उत्तर में तो पादरी साहब कहते हैं कि "तौरेत के आरम्भ में इंजील के अन्त तक परमेश्वर आत्मस्वरूप कहलाया।" जब स्वामीजी ने उसी

स्वामी—पर्व वही आयत २६—"तब ईश्वर ने कहा कि हम आदम को अपने स्वरूप में अपने समान बनावें।" इससे स्पष्ट पाया जाता है कि ईश्वर भी आदम के स्वरूप जैसा था। जैसा कि आदम आत्मा और शरीर युक्त था, ईश्वर को भी इस आयत से वैसा ही समझना चाहिये। जब वह शरीर जैसा स्वरूप नहीं रखता, तो अपने स्वरूप में आदम को कैसे बना सका?

पादरी—इस आयत में शरीर का कुछ कथन नहीं, परमेश्वर ने आदम को पवित्र ज्ञानवान् और आनन्दित रचा। वह सच्चिदानन्द ईश्वर है, और आदम को अपने स्वरूप में बनाया। जब आदम ने पाप किया तो परमेश्वर के स्वरूप से पतित हो गया। जैसे पहले प्रश्नोत्तर के २४ और ३० प्रश्न से विदित होता है। कोत्लोस्सियों की पत्री, तीसरा पर्व, ९ और १० आयत—"एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुमने पुराने मनुष्यता को उसके कार्यों समेत उतार फैंका है और नये मनुष्यता को जो ज्ञान में अपने सृजनहारे के स्वरूप के समान नये बन रहे हैं, पहना है।" इससे विदित होता है कि ज्ञान और पवित्रता में परमेश्वर के समान बनाया गया, और नये सिरे से हम लोगों को बनाया। कोरंतियों का तीसरा पर्व, १७ और १९ आयत—"और प्रभु ही आत्मा है, और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहीं निर्विघ्नता है, और हम सब विना परदा प्रभु के तेज को दर्पण में देख-देख प्रभु के आत्मा के द्वारा तेज से तेज लों उसके स्वरूप में बदलते जाते हैं।" इससे ज्ञात होता है कि विश्वासी लोग बदल के फिर परमेश्वर के स्वरूप में बन जाते हैं, अर्थात् ज्ञान, पवित्रता और आनन्द में, क्योंकि धर्मी होने से मनुष्य का शरीर का रूप नहीं बदलता है।

स्वामी—परमात्मा के सदृश आदम के बनने से सिद्ध होता है कि ईश्वर भी शरीर वाला होना चाहिये। जो परमेश्वर ने आदम को पवित्र और आनन्दित रचा था, तो उसने ईश्वर की आज्ञा क्यों तोड़ी? और जो आज्ञा तोड़ी तो विदित होता है कि वह ज्ञानवान् नहीं था। और —"जब

पुस्तक में दिखला दिया कि ईश्वर का शरीर वाला होना सिद्ध है, तब पादरी साहब कहते हैं कि ये सब बातें इस आयत से कुछ सम्बन्ध नहीं रखती। और फिर पुस्तक के वर्णन को छोड़ यहूदी, ईसाई और मुसलमानों के मत पर दौड़ जाते हैं। यहां यह प्रश्न होता है कि उक्त लिखे तीनों मत वाले खुदा को रूह मानते हैं, तो क्या बाइबिल के विरुद्ध नहीं हैं, कि जिससे ईश्वर का शरीर वाला होना सिद्ध होता है? —समर्थदान

उसने ज्ञान के पेड़ का फल खाया तब उसकी आँख खुल गई''—इससे जाना जाता है वह ज्ञानवान् पीछे से हुआ। जो पहले ही से ज्ञानवान् था, तो फल के खाने के पीछे ज्ञान हुआ, यह बात नहीं बन सकती। और प्रथम परमेश्वर ने उसको आशीर्वाद दिया था कि तुम फलो फूलो आनन्दित रहो, और फिर जब उसने ईश्वर की आज्ञा के विना उस पेड़ का फल खाया, तब उसकी आँखें खुलने से उसको ज्ञान हुआ कि हम नंगे हैं, गूलर के पत्ते अपने शरीर पर पहने।

अब देखना चाहिये—जो वह ईश्वर के समान ज्ञान में और पवित्रता में होता, तो उसको नंगा और ढका रहना क्यों नहीं जान पड़ता? क्या उसको इतनी भी सुध नहीं थी? जब परमेश्वर के समान वह ज्ञानी, पवित्र और आनन्दित था, तो उसको सर्वज्ञ और नित्य शुद्ध और आनन्दित रहना चाहिए, और उसके पास दुःख कुछ भी कभी न आना चाहिये। क्योंकि वह परमेश्वर के समान इन ऊपर लिखी तीनों बातों में है, तो वह पतित किसी प्रकार से नहीं हो सकता, और जो पतित हुआ तो परमेश्वर के समान नहीं हुआ, क्योंकि परमेश्वर ज्ञानादि गुणों से पतित कभी नहीं होता। फिर बतलाइये कि जैसे आदम प्रथम ज्ञान आदि तीनों गुणों में परमेश्वर के समान होके फिर उनसे पतित हो गया, वैसे ही विश्वासी लोग ज्ञानी, पवित्र और आनन्दित होंगे वा अधिक कम? जो वैसे ही होंगे, तो फिर जैसे आदम पतित हो गया, वैसे ही विश्वासी भी हो जावेंगे, क्योंकि वह तीनों बातों में परमात्मा के समान होकर पतित हो गया।

पादरी—बहुधा बातों में पहला उत्तर बहुत है। अब रहा यह कि—यदि आदम पवित्र था तो आज्ञा क्यों तोड़ी? उत्तर यह है कि वह पहले पवित्र था तो आज्ञा तोड़ के पापी हुआ।[१] फिर यह कहा कि—ज्ञानवान् पीछे से हुआ, यह बात नहीं है। जब भले बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाया[२] तब बुराई जान पड़ी, पहले न जानता था। 'आँखें खुल गईं और उसको जान पड़ा कि मैं नंगा हूँ'—इसका उत्तर यह है कि पापी होके उसको लज्जा आने लगी। फिर यह कि यदि परमात्मा के समान होता तो

१. देखिये, क्या विचित्र उत्तर है। —समर्थदान

२. यहां यह प्रश्न होता है कि वह परमेश्वर के समान ज्ञानी था, तो भले बुरे के ज्ञान के पेड़ को क्यों नहीं जानता था? जो यह कहो कि पहले नहीं जानता था, तो स्पष्ट ज्ञात होता है कि ज्ञानी नहीं था। —समर्थदान

पतित न होता, इसका उत्तर यह है कि वह परमात्मा के समान बनाया गया, न कि उसके तुल्य। यदि परमात्मा के तुल्य होता तो पाप में न गिरता। अन्त में जो पूछा कि—विश्वासी लोग आदम से अधिक पवित्र हो जायेंगे, इसका उत्तर यह है कि—अधिक और कम पवित्र होने में प्रश्न नहीं है, किन्तु स्वरूप के विषय में है कि परमेश्वर का रूप शारीरिक था वा नहीं? यदि वह स्वरूप जिसका कथन होता है, शारीरिक होता तो धर्मी लोग जब परमेश्वर के स्वरूप में नये शिरे से बन जाते हैं, अपने शरीर को बदल डालते हैं।

स्वामी—तौरेत का पर्व २, आयत ३—''उसने सातवें दिन अपने सब कार्य करके विश्राम किया, और ईश्वर ने सातवें दिन को आशीर्वाद दिया, और उसे पवित्र ठहाराया।'' ईश्वर को सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सच्चिदानन्द स्वरूप होने से परिश्रम जगत् के रचने में कुछ भी नहीं हो सकता, फिर सातवें दिन विश्राम करने की क्या आवश्यकता थी? और विश्राम किया तो छः दिन तक बड़ा परिश्रम करना पड़ा होगा? और सातवें दिन को आशीर्वाद दिया तो छः दिनों को क्या दिया? हम नहीं कह सकते कि परमेश्वर को एक क्षण भी जगत् के रचने में लगे वा कुछ भी परिश्रम हो।

जब स्वामीजी ने यह प्रश्न किया, तब पादरी साहब ने कहा कि—अब समय हो चुका, इससे अधिक हम नहीं ठहर सकते, और बोलते समय लिखाना पड़ता है, इससे देर बहुत लगती है, इसलिये हम कल भी नहीं करना चाहते। जो बोलते समय लिखा न जाय, तो हम कर सकते हैं। यदि स्वामीजी को लिख कर प्रश्नोत्तर करना है, तो हमारे पास प्रश्न लिखकर भेज दें, हम लिख कर उत्तर देंगे। इस पर डाक्टर हसबैंड साहब के कहने से सरदार बहादुर अमीचन्द साहब ने कहा कि—मेरी भी यही सम्मति है कि प्रश्नोत्तर लिख कर पत्र द्वारा किया करें। आज की नाईं किये जायेंगे, तो छः महीने तक भी पूरे न होंगे।

स्वामीजी ने कहा कि—प्रश्नोत्तर के लिखे विना बहुत हानि है, जैसे अभी थोड़ी देर के पश्चात् अपने में से कोई हुई बात के लिये कह सकता है कि मैंने यह बात नहीं कही। दूसरे बातचीत हुये पीछे और लोगों के हितार्थ छपा कर भी प्रकट नहीं कर सकते जो यदि कोई छपावे भी तो उसके जी में जो आवे सो छपवा सकता है। और जो मकान पर प्रश्नोत्तर लिख-लिख कर किया करें, तो इसमें काल बहुत लगेगा। और जो कहा

जाय कि इस प्रकार छः महीने में पूरा न होगा, सो मैं कहता हूं कि इसमें छः मास का कुछ काम नहीं है। हां, जो मकान पर पत्र द्वारा करेंगे, तो तीन वर्ष में भी पूरा न होगा, और जो मनुष्य सभी सामने सुन रहे हैं, ये नहीं सुन सकेंगे। इसलिये यही अच्छा है कि सब के सामने प्रश्नोत्तर किये जायें और लिखाया भी जाय।

पादरी साहब ने कहा कि—यहां प्रश्नोत्तर करने में लोगों के सुनने का लाभ बतलाया, परन्तु मैं जानता हूँ कि आज की वार्ता में यहाँ इतने लोग बैठे हैं, इनमें से थोड़े ही समझे होंगे। पादरी साहब की इस बात को सुनकर एक साहब मुसलमान कि जो प्रश्नोत्तर लिखने को बैठे थे और दो मुसलमान लोग कहने लगे कि हम कुछ भी नहीं समझे।[१] इस बात पर पादरी साहब ने कहा कि देखिये लिखने वाला ही नहीं समझा, तो और कौन समझ सकता था? फिर स्वामीजी ने जो दो दूसरे लिखने वाले थे, उनसे पूछा कि तुम समझे वा नहीं? उन्होंने कहा कि हां हम बराबर समझे। हमने जो कुछ लिखा है उसको अच्छी प्रकार कह सकते हैं। तब स्वामीजी ने कहा कि दो लिखने वाले तो समझे और एक नहीं समझा। अन्त में पादरी साहब ने दूसरे दिन प्रश्नोत्तर का लिखा जाना स्वीकार नहीं किया।

स्वामीजी ने पादरी साहब से कहा कि आज के प्रश्नोत्तर की तीन प्रति लिखी गई हैं। इन पर आप इस्ताक्षर कर दीजिये और मैं भी करे देता हूं, और प्रधान सभा से भी कराकर एक प्रति आपके पास, एक मेरे पास, और एक प्रधान के पास रहेगी। पादरी साहब ने कहा कि हम ऐसी बातों पर हस्ताक्षर करना नहीं चाहते।[२] इतनी वार्ता के पश्चात् सभा उठ खड़ी हुई और सब लोग अपने-अपने मकानों को चले गये। परन्तु स्वामीजी महाराज, सरदार भगतसिंह जी के मकान पर कि जो सभा के मकान के

---

१. मुसलमान लोग भी लिखने के प्रबन्ध को नहीं चाहते थे, क्योंकि उनका भी यह अभिप्राय था कि यदि यह प्रतिज्ञा न रहे तो किसी मौलवी को लाकर हम भी वादानुवाद करावें, और पीछे जो जी चाहे वैसा उल्टा सुलटा छपवा देवें। इस समय पोप लोग भी गड़बड़ करते थे कि हम भी शास्त्रार्थ करेंगे, परन्तु मौलवी साहब और पोप जी कोई भी न आया। जियाफत वा ब्रह्मभोज का काम होता तो सभी आते। यहां तो शास्त्रार्थ का काम था, कि लिखवाये पीछे पलट भी न सकते। —समर्थदान

१. क्या इसीलिये लिखवाने से भय करते थे? —समर्थदान

पास था, ठहरे। उस समय प्रश्नोत्तर की दो प्रतियों पर, कि जो स्वामी जी के पास रही थीं, उक्त दोनों साहबों के हस्ताक्षर भी करा लिये, और कुछ वार्तालाप करके वह साहब अपने-अपने मकानों को पधारे।

दूसरे दिन पादरी साहब ने स्वामीजी के पास पत्र लिख कर भेजा कि आज आप प्रश्नोत्तर करेंगे वा नहीं? यदि करना हो तो किया जाय, परन्तु लिखा न जाय, और लिखना हो तो पत्र द्वारा किये जावें। स्वामी जी ने उसके उत्तर में लिख भेजा कि प्रश्नोत्तर सबके सामने-सामने किये जावें, और लिखे भी जावें। इस प्रकार हमको स्वीकार है अन्यथा नहीं। क्योंकि दूसरी प्रकार करने में बहुत हानि है, जो कि हम पहले कह चुके हैं। अब यदि आपको लिखा कर प्रश्नोत्तर करने हों, तो मुझको लिखिये, मैं जब तक आप कहें यहां रहूं और प्रश्नोत्तर करूं। और यदि आपको इस प्रकार न करना हो, तो सरदार भगतसिंह जी को लिख भेजो कि अब प्रश्नोत्तर न होंगे, क्योंकि सभा के लिये जो उन्होंने प्रबन्ध कर रक्खा है, उठवा दें। पादरी साहब ने सरदार भगतसिंह जी को इसी प्रकार कहला भेजा, तब उन्होंने सब प्रबन्ध उठवा दिया। इसके पश्चात् स्वामीजी तीन चार दिन अजमेर में और रहे। मसूदा और नसीराबाद थोड़े दिन रह कर जयपुर पधारे।

जब स्वामीजी अजमेर से चले गये, उस के दूसरे दिन पादरी साहब ने मिशन स्कूल में कितने शहर के लोगों और मिशन स्कूल के विद्यार्थियों को इकट्ठा करके, स्वामीजी ने जो वाक्य लिखकर तौरेत और इंजील के भेजे थे, उनके उत्तर सुनाये कि जिससे ईसाई मत का कच्चापन किसी पर प्रकट न हो। इसके पीछे पादरी साहब को बाजार में वाज (उपदेश) करते समय कितने ही आदमियों ने कहा कि साहब! आप यहां हम मूर्ख लोगों के साथ प्रतिदिन घंटों तक सिर दुखाया करते हैं, परन्तु जब आप स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से प्रश्नोत्तर करते थे, तब तो आप ने यह कहा था कि हमको इतना समय नहीं कि प्रश्नोत्तर करते समय लिखाते जाएं। यदि आप स्वामीजी को अपने मत की कोई भी बात स्वीकार करा देते, तो उनके पीछे हजारों आपकी बात को स्वीकार करते। अब आपके व्यर्थ कहने से क्या होता है?